Volume: 4 Issue: 6 Pages: 119-121

महाकुम्भ का समसामयिक महत्व

*[1] डॉ. दिनकर त्रिपाठी

*[1] एसोसिएट प्रोफेसर एव अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग, फिरोज गांधी कॉलेज रायबरेली, उत्तर प्रदेश, भारत।

Article Info.
E-ISSN: 2583-6528
Impact Factor (SJIF): 6.876
Peer Reviewed Journal
Available online:
www.alladvancejournal.com

Received: 21/ May/2025
Accepted: 23/June/2025

***Corresponding Author**
डॉ. दिनकर त्रिपाठी
एसोसिएट प्रोफेसर एव अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग, फिरोज गांधी कॉलेज रायबरेली, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश:
'वास्तव में यह समग्र भारत था। कैसा आश्चर्यजनक विश्वास जो हजारों वर्ष से इनके पूर्वजों को देश के कोने-कोने से खींच लाता है।' पं. जवाहर लाल नेहरू ने 'डिस्कवरी आफ इंडिया' में लिखा है। वे कुंभ पर आश्चर्यचकित थे। ठीक इंसप्रकार वर्तमान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदीजी ने कहा है "महाकुंभ भारत की शाश्वत आध्यात्मिक विरासत का प्रतीक है और आस्था एवं सद्भाव का उत्सव है।"यह प्रयागराज में विश्व का सबसे बड़ा मेला है। महाकुंभ देश-विदेश के अनगिनत श्रद्धालुओं की जिज्ञासा है। भारतीय संस्कृति हजारों वर्ष के अनुभवों का परिणाम है। संस्कृति और परंपरा अंधविश्वास नहीं हैं। राष्ट्र जीवन में बहुत कुछ करणीय है और बहुत कुछ अकरणीय। यहां धर्म, दर्शन, संस्कृति, परंपरा और आस्था राष्ट्रजीवन के नियामक तत्व हैं। ये पांच तत्व राष्ट्रजीवन को ध्येय और शक्ति देते हैं। कुंभ मेला इन्हीं पांचों तत्वों की अभिव्यक्ति है। महाकुंभ समागम संस्कृति प्रेमियों का महाउल्लास है। कुंभ स्थल प्रयाग संगम की भूमि भी है। संगम का अर्थ है मिलना। प्रयाग तीन नदियों का संगम है। यहां गंगा, यमुना और सरस्वती नदियां गले मिलती हैं। यह यज्ञ, साधना, योग और आत्मदर्शन का पुण्य क्षेत्र रहा है। ऋग्वेद के ऋषि 'इमे गंगे यमुने सरस्वती..' गाकर स्तुति करते हैं। कुछ सरस्वती को स्वीकार नहीं करते। सरस्वती का अस्तित्व सिद्ध हो चुका है। ऋग्वेद में सरस्वती को नदीतमा कहा गया है। तीनों संगम में मिलती हैं। तब तप, यज्ञ और योग की तपोभूमि प्रयाग हो जाती है और प्रयाग हो जाता है तीर्थराज। प्रयाग सामान्य नगर क्षेत्र नहीं है। सरकारें खूबसूरत नगर बना सकती हैं, लेकिन प्रयाग जैसा तीर्थ कोई भी सत्ता नहीं बना सकती। प्रयाग जैसे तीर्थ हजारों वर्ष की तप साधना में विकसित होते हैं। गजब की है यह पुण्यभूमि। पाणिनि ने यहीं पर अष्टाध्यायी लिखी थी। इंडोनेशिया के प्रसिद्ध 'ककविन' में भी प्रयाग कुंभ की महिमा है 1 दिव्य-भव्य महाकुंभ 2025 का समापन हो चुका है, लेकिन इसकी दिव्यता, भव्यता और सेवा भावना की यादें हमेशा के लिए इतिहास में दर्ज हो गई हैं। अगले छह साल बाद लगने वाले कुंभ तक के लिए श्रद्धालु तो विदा हो चुके हैं।

मुख्य शब्द: महाकुंभ, प्रयागराज, संस्कृति, धर्म, दर्शन,परम्परा,यज्ञ, अनुष्ठान

प्रस्तावना:

भारत वर्ष अनादि काल से हीं धर्म प्रवण देश रहा है। आर्यों की धार्मिक धारणा यागानुष्ठानों से परिपूर्ण रही है। मानव जीवन की प्रत्येक क्रिया संक्रिया और प्रतिक्रिया अनुष्ठानों से अनिवार्यतः अनुप्राणित होती है। सृष्टि का सृजन, संचलन तथा नियमन कार्य यज्ञ की सम्पादनीयता का प्रतिरूप है। यही आर्य धर्म है। यही प्रथम धर्म है। यही देवताओं का आदि धरम रहा है। यज्ञ, याग, इष्टि तथा मख ये सभी पद त्याग, देवपूजा और संगतिकरण की अर्थवत्ता का ख्यापन करते हैं। वैदिक धर्म के मूल में यही काम्य रहा है। मानवजीवन का साध्य रहा है। परम लक्ष्य रूप मोक्ष, स्वर्ग, अक्षय्यसुकृत, ब्रह्महत्या जैसे पाप एवं मृत्युपाश से मुक्ति आदि सकलकांक्षाओं की पूति यज्ञानुष्ठानों के सम्पादन में निहित रही है। याग सर्वश्रेष्ठ त्याग का नाम है। जो देवता विशेष को उद्देश्य बनाकर द्रव्य अथवा भाव की अर्पण क्रिया द्वारा ही सिद्ध होता है। आर्य मनीषा ने अपनी तपन क्रिया में इसी त्याग रूप याग का अनुभव किया है। साथ ही ऋषियों की तपश्चर्या में याग विधानों की प्रक्रियाओं के भी दर्शन परमेश्वर की अनुकम्पा से प्राप्त हुए। तापस जीवन वेला में पवित्र कर्णकुहरों में श्रुत आर्ष चक्षुसादृष्ट अथवा हृदय में साक्षात्कृत ज्ञान राशि मंत्र समुदाय के रूप में प्रापत हुई है। मंत्रों में नाना यज्ञ विधानों के संज्ञान सन्दर्भित एवं निरूपित हैं। यजुर्वेद के यजुष यागों की प्रक्रिया व्यवस्थाओं के सन्दर्भों से परिपूर्ण हैं। ज्ञातव्य है कि आर्ष परम्परा में प्राप्त याग विषयक संज्ञानों तथा अध्यात्म विज्ञान के सहस्यों का परस्पर आदान-प्रदान किए जाने की प्रबल इच्छा और आवश्यकता के परिणाम स्वरूप ऋषियों, मुनियों, साधकों तथा जिज्ञासुओं का आपस में मिलना और चर्चा करना प्रारम्भिक अवस्था में ही आरम्भ हो चुका था। जिससे अपनी- अपनी अनुसन्धित्सा में प्राप्त अथवा अनुभूत तथ्यों

का आदान-प्रदान सम्भव होता रहा है। यहीं से ही सम्मेलन, गोष्ठी और संगोष्ठी तथा विचार चर्चा समूहों का आर्य मनीषा के ज्ञानार्जन क्रम में प्रादुर्भाव हुआ। भारत वर्ष के विभिन्न पवित्र स्थलों पर एतदर्थ समागम हेतु ज्ञानी विज्ञानी और अनुभवी एकत्र होकर परस्पर में ज्ञानसंवृद्धि करते रहे। भारती (Indology) का भण्डार भरते रहे है। ऋषियों, मुनियों, साधुसन्तों, चिन्तकों और अन्वेषकों के मिलन केन्द्र भी विकसित होते गये है। उन्हीं मिलन केन्द्रों में ज्ञान याग के सम्पादक में मानव ज्ञान की विविध विद्या शाखाओं की विकसन शीलता में योगदान करने की इच्छा प्रयाग की पावन धरती पर प्रवहमान पुण्य सलिला गङ्गा, यमुना एवं सरस्वती (अदृश्य) के पवित्र संगम स्थल पर प्रतिवर्ष विद्वत् संगमन होने लगा। सम्मेलन, गोष्ठी, संगोष्ठी तथा चर्चा, परिचर्चा आयोजित होने लगी। ज्ञान-विज्ञान का आदान प्रदान होने लगा। यहाँ ज्ञान-यज्ञ अथवा याग होने लगा। ज्ञान का अध्ययन अध्यापन तथा आदान प्रदान स्वयं में यज्ञ अथवा याग होता है। जो सर्वश्रेष्ठ होता है। इसीलिए पवित्र संगम तट पर प्रतिवर्ष सम्पन्न होने वाला एक मास का सम्मेलन ज्ञान-याग अथवा यज्ञ का अनुष्ठान ही प्रयाग कहलाया। प्रयाग का शाब्दिक अर्थ प्रगतःयागः (Advance Sacrifice) अर्थात् सर्वश्रेष्ठ याग अथाव यज्ञ है, जहाँ प्रतिवर्ष प्रगतयाग होता रहा वही स्थान प्रयाग कहलाने लगा। यह सभी तीर्थों का राजा होने से तीर्थराज प्रयाग अथवा प्रयागराज है। जिसका नाम परिवर्तित ऐतिहासिक क्रम (Cronodogical order) में कभी इलावास अर्थात इला देवी का निवास स्थल कहलाया; तो कभी उसे इलाहाबाद यह नाम प्रदान कर दिया गया। सरकार द्वारा वर्तमान वर्ष में अब पुनः प्रयागराज यह नाम प्रदान कर दिया गया है।

प्राचीन काल में नदियों के जलमार्ग, पदाति मार्ग के संगम (सम्मेलन) लिए सुकर एवं सुगम होता था। माघ मास में यहाँ की जलवायु एवं वातावरण मानव के अनुकूलन में होता है, अतएव प्रत्येक वर्ष माघ माह में यहाँ सम्मेलन ही मेला का स्वरूप प्राप्त कर आयोजित होता रहा। चूँकि यहाँ की तनों नदियों की त्रिवेणी के पुण्य सलिल में स्नान करने से परम पावनत्व, पापविमोचनत्व एवं आध्यात्मिक शानित तथा उत्सर्ग की प्राप्ति होती है, साथ ही देशान्तर से पधारे हुए ज्ञानियों, धर्माचार्यों, तत्तज्ञों और ब्रह्मविद्या के जिज्ञासुओं द्वारा दिया जा रहा ज्ञानदान सहज रूप में प्राप्त होता है। इसीजिए सम्पूर्ण सनातन अथवा वैदिक धर्मावलम्बीजन यहाँ श्रद्धया उपस्थित होते रहे हैं।

इस आर्ष परम्परा के पल्लवन काल से वर्तमान तक असंख्य स्नानार्थी, ज्ञानार्थी और तत्त्वदर्शियों का सम्मेलन होता रहा है। स्नान दान और ज्ञान की यहाँ पर महत्ता सिद्ध है, जिसकी प्रापित की मनोकमना प्रत्येक हिन्दू धर्मावलम्बी की होती ही है। यहाँ पर जहाँ एक ओर राजा हर्षवर्धन अपना सब धन दान में दिए, वहीं दूसरी ओर महाराजा धंग ने सर्वस्वदान के साथ ही अपना शरीर (प्राण) भी त्रिवेणी की पावन जलधारा में समाधि लेकर अर्पित कर दी। यह है प्रयाग के संगम स्नान ज्ञान और दान का उदाहरण जो संसार में अनुपम है। यह सर्व समावेशी स्वरूप सम्पन्न कुम्भ, स्नान, ध्यान, ज्ञान और दान का उदाहरण संसार मे अनुपम है। कुम्भ शब्द कु = धरती + उम्भित = आपूरित या भरा हुआ, से बना है। कुम्भ जल से सारी पृथ्वी को भरता है। पुराणमत में जब बृहस्पति आदि ग्रह अन्तरिक्ष में रहते हुए जन कल्याण के लिए समय का संकेत अथवा आदेश करते है, तो वह कुम्भ काल माना जाता है। यज्ञानुष्ठानों में मंत्रोच्चारण द्वारा आहुति अर्पण क्रिया से पृथ्वी का संपोषण किया जाना भी कुम्भ है। जनकल्याण के लिए तमस अथवा अशुभ पक्ष की अपनयन क्रिया भी कुम्भ है। कुम्भ सर्वजन कल्याणार्थ सबको साच्छादित करता है। समेटता है। एकत्र करता है। सबको मिलाता है। सम्मेलन कराना भी कुम्भ क्रिया है। जल कुम्भ में तथा कुम्भमें जल है। यही मानव शरीर का प्रतिरूप भी है। आर्य मनीषा की पवित्र धारणा में अनेकता में एकता की स्थापना करना ही कुम्भ हैं अथर्व वेद में सबसे पहले कुम्भ का उल्लेख हुआ है। "यत्पिण्डे तत् ब्रह्माण्डे" अर्थात् जो पिण्ड (मानव शरीर) में है; वही ब्रह्माण्ड में विद्यमान है। अतएव मानवकाया कुम्भ की भाँति ही है। नदियों के जल सन्निपात में स्नान करने से व्यक्ति धन्य हो जाता है। ज्योतिर्विज्ञान में स्थान और काल गणना के अधार पर 11 वर्ष, ग्यारह माह और 27 दिवस के पश्चात् कुम्भ लगता है। 11 कुम्भके बाद महाकुम्भ लगता है। चंद्रमा और सूर्य के मकर राशि में आने पर मौनी अमावास्या होती है। अर्धकुम्भ हरिद्वार और प्रयाग में होता है। अन्यत्र नहीं। देश के प्रयाग, उज्जैन, नासिक और हरिद्वार इन चार अमृत क्षेत्रों में ही कुम्भ लगता है। समुद्र मन्थन से उत्पन्न अमृत कलश (कुम्भ) से अमृत छलक कर यहाँ गिरने से नदी के जल में अमृत तत्त्व का अगामन हुआ। जिसमें स्नान करने से विचार शुद्धि, पावनत्व और अमरत्व की प्राप्ति सम्भव होती है। कुम्भ, अर्धकुम्भ और महाकुम्भ की स्नान परम्परा का अपना माहात्म्य सिद्ध है। इस वर्ष भारत सरकार के सौजन्य से विश्वस्तरीय कुम्भस्नान के मेल का प्रयागराज में आयोजन किया गया है, जो प्रत्येक की दृष्टि से सर्वोपरि एवं अभूतपूर्व रहा है।

सनातन धर्म एवं संस्कृति में कुम्भ स्नान का अतिशायी माहात्म्य है। अमृत कुम्भ की उत्पत्ति पौराणिक अवधारणा में देवों और दैत्यों द्वारा किए गए समुद्र मन्थन से हुई है। देवराज इन्द्र के पुत्र जयन्त उस अमृत कुम्भ को लेकर भागने लगे। दैत्यों को इसका संकेत प्राप्त होने पर वे उनका पीछा करने लगे। जयन्त के भागते समय कुम्भ से छलकर कर अमृत की कुछ बूँदें प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक में गिरीं। इन्हीं स्थानों पर कुम्भ मेलों का आयोजन किया जाता है। यद्यपि कुम्भ का अर्थ कलश अथवा घड़ा है, किन्तु कुम्भ उस स्थान विशेष की भी संज्ञा है, जहाँ श्रेष्ठ तत्त्वज्ञ महात्माओं का संगमन तथा सदुपदेशों होने से पृथ्वी अनुगृहीत होती है; अथवा बुरे दोषों को दूर कर कल्याण करने वाले स्थान को कुम्भ कहते हैं। इसके अतिरिक्त यह भी अर्थ ग्रहणीय है कि पृथ्वी पर भावी कल्याण की सूचना देने के लक्ष्य से प्रयाग, हरिद्वार, नासिक और उज्जैन आदि पवित्र स्थानों को उद्देश्य बनाकर वृहस्पति आदि ग्रह राशि आकाश में जब पुंजी भूतहोते हैं, तो वह कुम्भ कहलाता है। इसी प्रकार पापों का अपनयन एवं प्रक्षालन कर पुण्य और पवित्रता की वृद्धि क्रिया से जिस स्थान पर पृथ्वी का भार न्यून किया जाता है, उसे कुम्भ कहते हैं। इस प्रकार संक्षेपतरू कहा जा सकता है कि संसार की कल्याण भावना से भावित एवं प्रेरित होकर जहाँ पाप, दोष एवं अज्ञान का निरसन किया जाता है; वह स्थान कुम्भ कहलाता है। वस्तुतरू संसार के कल्याण तथा मानव को मोक्ष्य प्राप्ति के निमित्त कुम्भ में विभिन्न प्रकार के अनुष्ठान सम्पादन किए जाते हैं। इसके साथ ही जहाँ सत्कर्म करके मनुष्य लोक एवं परलोक की सफलता के लिए तप, व्रत, दान-दक्षिणा और यज्ञानुष्ठान सम्पन्न किया जाता है। गंगा, यमुना, सरस्वती इन तीनों नदियों के संगम स्थल प्रयाग में कुम्भ का स्नान प्रत्येक सनातन धर्मी को परम काम्य रहा है; क्योंकि प्रयाग त्रिवेणी में संगम का स्नान सद्यरू पाप प्रक्षालन एवं मुक्ति प्रदाता रहा है। ऋग्वेदसंहिता 9.113.11 खिलपाठ 2.12 तथा वामनपुराण 23.19-20 पद्मपुराण उत्तर खण्ड 27.149, स्कन्दपुराण अवन्तिखण्ड 2.71.62 मत्स्यपुराण 106.27, 51, 107.9, 112.8 आदि सन्दर्भों से प्रयाग में त्रिवेणी स्नान की महिमा का ख्यापन विपुलता में किया गया है।

ज्ञातव्य है कि प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक में प्रत्येक 12वें वर्ष पर कुम्भ का योग बनता रहता है, किन्तु प्रयाग और हरिद्वार में छठें छठें वर्ष पर अर्ध कुम्भ का आयोजन होता है। हरिद्वार और प्रयाग के अर्धकुम्भ के साथ क्रमशरू नासिक और उज्जैन में भी कुम्भ होता है। इस सम्वत्सर 2081 का महाकुम्भ अमृत कुम्भ के रूप में मनाया गया। जो अब तक के सभी आयोजनों से व्यापक; दिव्य और भव्य रूप में रहा है। यह विश्वस्तरीय अमृत कुम्भ सम्पूर्ण धरती तल पर अद्वितीयता प्राप्त कर लिया। है। इसमें पधारे हुए देश-विदेश के श्रद्धालुओं की अनुमानित एवं राज्य घोषित संख्या लगभग 68 करोड़ थी। जिसमें स्नानार्थियों की संख्या लगभग 66.30 करोड़ मानी गयी है। यह अमृत कुम्भ निश्चयेन समस्त सनातन धर्म और संस्कृति में आस्था रखने वालों के लिए आकर्षण का परम केन्द्र रहा है। राष्ट्रपति,

उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मंत्रीगण, राज्यों के मुख्यमंत्री, मंत्रीगण, राज्यपाल और विदेश के राजनयिकों ने भी यहाँ पधार कर अमृत स्नान किया। आयोजन की पूर्ण सफलता अतीव प्रशंसनीय रही है। इसका सम्पूर्ण श्रेय हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी एवं उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी को प्राप्त हुआ है।

संदर्भ सूची:

1. Girish Gupta-Mahakumbh. Bishan Singh Mahendra pal Singh, Dehradun, 2025. ISBN 978-93-60 28-853-2
2. Nityanand Mishra-Kumbh-The Traditionally Modern Mela, Bloomsbury India Publisher ISBN 978-93-6 131-5 14-5
3. Www. Jagran.com
4. Www.com gov.com
5. डॉ. राजेंद्र त्रिपाठी रसराज- प्रयागराज कुंभकथा, सत्साहित्य प्रकाशन, मथुरा 2025
6. https://kumbh.gov.in
7. https://x.com/narendramodi/statu